डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

शिक्षा : सुभारती विश्वविद्यालय से कम्प्यूटर में परास्नातक, कानपुर विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.,

वृत्ति : अध्यापन एवं लेखक। 50 राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्र वाचन, लगभग 50 शोधलेख प्रकाशित।

मौलिक पुस्तक : जनसंख्या शिक्षा, प्रयागराज कुम्भ एक सांस्कृतिक धरोहर, पं. दीनदयाल उपाध्याय, भारत की सांस्कृतिक संजीवनी गंगा, पूर्वोत्तर भारत और हिन्दी (शोध ग्रन्थ), हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद (शोध ग्रन्थ), विश्व पटल पर हिन्दी।

सम्मान : साहित्य अकादमी भोपाल (म.प्र.), क्रान्तिधरा साहित्य अकादमी मेरठ द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान

सम्प्रति : प्रधानाचार्य, माध्यमिक शिक्षा विभाग (उ.प्र.) मोबाइल.: 9415480576

ई-मेल : awasthidilip98@gmail.com

डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

वृत्ति : शिक्षाविद एवं साहित्यकार। क्षेत्रीय संयोजक- पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी शिलांग (मेघालय) भारत, संयोजक- राष्ट्रवादी लेखक संघ, उत्तर प्रदेश, चेयरमैन- श्रीअरविन्दो सोसायटी, केन्द्र-गोण्डा, उत्तर प्रदेश

सम्मान : साहित्यभूषण(काव्य रंगोली पत्रिका),साहित्य अकादमी भोपाल (म.प्र.), क्रान्तिधरा साहित्य अकादमी मेरठ द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान

साहित्यिक अवदान : 'पंकिल पुलिन पर' (कविता संग्रह), 'खरी पाँखुरी'(मुक्तक काव्य), 'बाल-साहित्य' (सम्पादन), 'ज्योति प्रखर' (सम्पादन), 'यादगार' वार्षिक (सम्पादन), 'मामी हैं लरकोरि सुगऊ' (लोक साहित्य समीक्षा), 'शब्द कहीं मर न जायँ' (लोक साहित्य सर्वेक्षण), पूर्वोत्तर भारत और हिन्दी (शोध ग्रन्थ), हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद (शोध ग्रन्थ), विश्व पटल पर हिन्दी , (विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में प्रस्तुत), 20 शोधपत्र प्रकाशित।

स्थाई पता : 753, सिविल लाईन, गोण्डा (उ.प्र.) मोबाइल.: 9450527126

ई-मेल : rnp26.11@gmail.com

Also available on amazon

Scan QR Code

Nikhil Publishers & Distributors

37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony,
Shahganj, Agra-282010 (U.P.) India
Mo. 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Visit us : www.nikhilbooks.in
www.nikhilbooks.com

हिन्दी के विविध आयाम

डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

ISBN : 978-93-90272-08-2

9789390272082

₹ 249.00 $10

हिन्दी के विविध आयाम

डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी । डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, without written permission from the publisher or author.

ISBN : 978-93-90272-08-2

- © सम्पादक
- प्रथम संस्करण : 2020
- मूल्य : ₹ 249/- मात्र $ 10
- शब्द सज्जा :
  विष्णु ग्राफिक्स
- मुद्रक :
  श्रीपूजा प्रिन्टर्स
- प्रकाशक :
  निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
  37, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी शाहगंज, आगरा
  मो. : 9458009531-38
  e-mail : nikhilbooks.760@gmail.com
  website : www.nikhilbooks.in

हिंदी के विविध आयाम

सम्पादक
डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी
डॉ. रघुनाथ पाण्डेय

निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा

10. शमशेर के काव्य में भाषायी सामर्थ्य 63 – 70
डॉ0 अनुपम कुमार शुक्ला

11. भारतीय साहित्य की कालजयी रचनाओं में लोक जीवन 71 – 79
डॉ. आनन्दसिंह पटेल

12. देवनागरी लिपि का विकास और प्रसार : तब से अब तक 80 – 90
डॉ. बिजेन्द्र कुमार

13. मीडिया : भाषा, संस्कृति और उपभोक्ता हित 91 – 94
माणक तुलसीराम गौड़

14. राष्ट्रभाषा हिन्दी में रोजगार के अवसर 95 – 100
डॉ. कीर्ति पन्त (प्राचार्या), दीक्षा मेहरा

15. भाषा और हिंदी राजभाषा के रूप में 101 – 108
डॉ0 धीरज सिंह

16. हिन्दी के अस्तित्व का प्रश्न एवं चुनौती 109 – 112
शिलाची कुमारी

17. हिंदीभाषा विकास में माध्यमों का योगदान 113 – 118
डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी

18. मानवीय संवेदनाओं के कथाकार : शैलेश 119 – 123
अरविन्द कुमार

19. विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी 124 – 133
रिपुदमन तिवारी

20. देवनागरी लिपि : तब से अब तक 134 – 140
रश्मि किरण

21. राजस्थानी (बागड़ी) पंजाबी और हिंदी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन 141 – 146
डॉ. हरप्रीत कौर

12 बिजेन्द्र कुमार

देवनागरी लिपि का विकास और प्रसार : तब से अब तक

देवनागरी या कहीं–कहीं नागरी के नाम से जानी जाने वाली लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक है। अपनी वैज्ञानिकता के कारण ही आज देवनागरी अपना विशेष महत्व रखती है। यह भी सर्वविदित है कि लिपि के माध्यम से ही भाषा को स्थायित्व प्राप्त होता है, भाषा की वैज्ञानिकता एवं सार्थकता का मूल्यांकन भी लिपि की श्रेष्ठता एवं वैज्ञानिकता पर निर्भर करता है यह लिपि की परंपरा कब प्रारंभ हुई इस पर विचार करने से पता चलता है कि भारत की प्राचीनतम लिपि सिंधु–लिपि हो सकती है, हालांकि अभी तक विद्वान इसको पढ़ने में सफल नहीं हो पाए हैं। जब तक इसका अध्ययन नहीं होता तब तक ब्राह्मी–लिपि ही भारत की प्राचीनतम लिपि है, जो कि लगभग 500 ईसवी पूर्व की है। इसके बाद गुप्त–लिपि का उदय हुआ। गुप्त लिपि 200 वर्षों तक प्रयुक्त होने के पश्चात कुटिल रूप का प्रयोग आठवीं शताब्दी तक होता रहाहै। 9वीं 10वीं शताब्दी में प्राचीन देवनागरी का रूप सामने आया, अब 21वीं शताब्दी में इसका आधुनिकतम रूप प्रस्तुत हुआ है। देवनागरी लिपि की इसी विकास यात्रा काअध्ययन प्रस्तुत शोध–आलेख में किया गया है।

देवनागरी लिपि नामकरण, विकास और प्रसारः तब से अब तक यह बड़ा प्रश्न है कि देवनागरी या नागरी लिपि की उत्पत्ति कहां से हुई और आज यह जिस अवस्था में है, यह प्रारंभ में किस अवस्था मे थी। किन परिस्थितियों में इनका विकास हुआ। इन प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है। लेकिन पहले इस के नामकरण पर विचार करते हैं कि इसका नामकरण नगरीया देवनागरी कैसे पड़ा? इस विषय पर अनेक विद्वानों के पृथक मत हैं जो इस प्रकार हैः–

डॉ धीरेंद्र वर्मा के अनुसार– मध्ययुग में स्थापत्य की एक शैली थी 'नागर' जिसमें लिपि चिह्नों की आकृतियां चतुर्भुज के रूप में थीं। इन चतुर्भुजी (पमभंग) लिपि चिह्नोंवाली नागर शैली के आधार पर इस लिपि का नाम नागरी पड़ा होगा।